6-5-21 — 200M0029 —

देवीसिंह सिंगावड़ा "काचबे कलावतरी बात"

काचबो जी जात का सोढ़ा था, उनका असली नाम हमीरसिंह था किलाणसिंह का लड़का था। लाखा फुलाणी इनका नाना था। लाखाजी फुलसिंह का लड़का था। इसलिए साथ में बाप बेटे का नाम लाखा फुलाणी बोलते हैं। भुवाजी ने प्यार से नाम काचबसिंह दिलवाया था। काचबाजी जो नये-नये चाँद को अपनी शादी करता था। एक पाटन नगरी में पठी कंवार लड़की थी जो अन्तराव सोखला उनकी लड़की थी। पाटन नगरी में समबन्ध के सगाई के वास्ते ऊच्चे-ऊच्चे राजपूतों को भेजा। रवाना होने के बाद दोहा—

गायों भरीयो गवाड़ सांड दड़ुके दुबको,
पेलो कुवारी हाथ, पूरे मासे पदमणी

इस दोहे का अर्थ → गायों को दोहने

काचबो

मतलब दुवाई करने वास्ते सवागण ओरत आवे

ताकी सगाई (सम्बन्ध अच्छा हो —

पनी कँवार की भोजाई थी जो अपनी नणद पनी को

अपने भाई के साथ शादी करने का विचार थी

तभी पनी कँवर का मन काचबे से इनकार करिया

करती थी तब पनी कँवर का मन कहने लगता

की काचबा पानी का जीव है। लाखा फुलाणी-

अपने भाणीज काचबे की शादी करने के लिए

पनी कँवर से जाते बाद में आगये दुसरे

गाँव में करवा दी। वो शादी करवाकर

पनी कँवर के गाँव होकर गुजरे तब उनके

ऊँटो के मुँह में केशर-कस्तुरी

ऊँटों को खिलाने वास्ते खोली -

तब केशर-कस्तुरी की सुगन्ध आने

देख अपनी भाभी को पूछा की मेरी

काचबो

केशर कस्तुरी किसी ने बाहर निकाली
तभी दासीयों ने कहा कि यह तो काचबे
कलावत की बरात है और उनके ऊँटो
के मुंह में केशर रखा रहे है।
तभी पनी कंवार मनमें देखके लगी की भाभी
ने ठगी का विचार किया।
तब पनी कंवर ने काचबे के भाभी लाखा-
फुलाणी को समझाया कि मेरे में धोखा
होगया है ध्यान नही होने के कारण-
ये धोखा हो गया है। अब मे काचबे से
शादी करुगी - तब काचबेजी ने कहा मै तो
जल का शिव हू फिर बाद लाखा-फुलाणी
ने अपने भाणीज को कहकर शादी-